इकाई 15 वर्ग समाज की ओर

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप:

- आधुनिक वर्ग समाज का अर्थ समझ सकेंगे,
- पूर्व-आधुनिक और आधुनिक वर्ग समाजों का अंतर स्पष्ट कर सकेंगे,
- आधुनिक वर्ग समाज के उदय के लिए उत्तरदायी कारकों पर प्रकाश डाल सकेंगे, और
- आधुनिक वर्ग समाज में राष्ट्र और वर्ग के बीच का संबंध स्पष्ट कर सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

पूंजीवादी औद्योगिक अर्थव्यवस्था के प्रसार और आधुनिक राजनीति के विकास का अध्ययन आप पिछली इकाइयों में कर चुके हैं। इन परिवर्तनों ने यूरोपीय समाज और जीवन को पूरी तरह बदल दिया। इसके परिणामस्वरूप संरचना पूरी तरह बदल गई और इसी के तहत आधुनिक वर्ग समाज का उदय हुआ। इस आधुनिक वर्ग समाज की चर्चा करने का उद्देश्य मात्र पुराने सामाजिक वर्गों और नए सामाजिक वर्गों का उल्लेख मात्र करना नहीं है बल्कि उस पूरी सामाजिक अभिव्यक्ति की ओर इशारा करना है जिसके द्वारा नए समाज ने अपने को औद्योगिक समाज के रूप में परिभाषित किया था।

औद्योगीकरण और फ्रांसीसी क्रांति ने औद्योगिक वर्ग व्यवस्था के लिए आधुनिक संदर्भ प्रस्तुत किया था। इसी संदर्भ में उदित आधुनिक वर्गो ने अपने को परिभाषित किया था और एक दूसरे के परिप्रेक्ष्य में ऐतिहासिक भूमिका निर्धारित की थी। इसी संदर्भ में 18वीं शताब्दी से लेकर आजतक समाज और राजनीति को स्वरूप प्रदान करने में भी उन्होंने अहम भूमिका निभाई थी।

समाजवादी आंदोलनों खासकर 1917 की रूसी क्रांति ने इस सामाजिक व्यवस्था को बड़ी चुनौती दी। पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था में अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार विभिन्न वर्गों ने इस चुनौती पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। भूतपूर्व सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप में सामाजिक व्यवस्था के ध्वस्त हो जाने के बाद एक बार फिर पूंजीवादी विश्व में विभिन्न वर्गों की सामाजिक और राजनैतिक भूमिकाएं प्रभावित हुईं।

इस इकाई में हम पुराने, पूर्व-बुर्जुआ सामाजिक व्यवस्था के टूटने और आधुनिक वर्ग समाज, खासकर एक बुर्जुआ उदारवादी समाज की ओर बढ़ने की चर्चा करेंगे।

15.2 वर्ग समाज की परिभाषा

जब हम यह कहते हैं कि औद्योगीकरण और फ्रांसीसी क्रांति के बाद 18वीं शताब्दी में वर्ग समाज का उदय हुआ तो यह कहने का तात्पर्य क्या है? तो क्या इससे पहले समाज के विभिन्न वर्ग असमान नहीं थे ? क्या पूर्व-पूंजीवादी यूरोप के समाज में विभाजन नहीं था ? क्या वर्गों का अस्तित्व नहीं था ?

मध्य युग के कला और साहित्य में मूलत: तीन प्रकार के सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व हुआ था। वे जो युद्ध करते थे (भूमिधर कुलीन वर्ग), वे जो प्रार्थना करते थे और समाज के आध्यात्मिक कल्याण की देखरेख करते थे (पुजारी) और वे जो खेत और दुकानों में काम करते थे (किसान और ग्रामीण शिल्पी)। शहरों के उदय के बाद एक चौथा सामाजिक समूह उदित हुआ जिसमें व्यापारी शामिल थे। मध्ययुगीन अर्थव्यवस्था में भूमिधर अभिजात वर्ग और किसान केंद्रीय धुरी थे और आधुनिक वर्ग संबंधों की तरह उनका संबंध भी उत्पादन से जुड़ा हुआ था। भूमिधर अभिजात वर्ग खेत के मालिक थे परंतु वे खेत में काम नहीं करते थे। खेतों के मालिक किसानों और कृषि मजदूरों से जबरदस्ती काम करवाते थे। पराधीन होने के बावजूद वे खेती के द्वारा अपने परिवार का पालन पोषण कर लेते थे। सामंती पदानुक्रम की पूरी इमारत, उनके उपभोग के तरीके और सामाजिक प्रथाएं किसानों से प्राप्त अधिशेष पर आधारित थी। वे किसानों से जबरन श्रम करवाते थे और उनसे कर भी वसूल करते थे। इसी का उल्लेख करते हुए मार्क्स ने लिखा था कि अभी तक के समाज का इतिहास 'वर्ग संघर्ष' का इतिहास है। यहां तक कि आरंभ में शहरों पर भी सामंतों का वर्चस्व था। राजनैतिक स्तर पर भी संबंधों की एक पूरी व्यवस्था कायम की गई थी जिसमें कमजोर व्यक्ति अधिक शक्तिशाली भूस्वामीयों से संरक्षण चाहते थे और उसके बदले में आजीवन निष्ठा और सैनिक सेवा का वचन देते थे और इसके बदले में उन्हें जमीन दी जाती थी। इस प्रकार मध्ययुगीन समाज में किसानों के साथ एक विशेष संबंधों के जरिए कृषीय अधिशेष की प्राप्ति और भूमि सम्पदा शक्ति के विकेंद्रीकरण का आधार बने। इस विकेंद्रीकरण के द्वारा भूमिपतियों का सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक वर्चस्व कायम हुआ जिसकी प्रकृति सामंती थी।

इन अनिवार्य विशेषताओं के अलावा मध्ययूगीन आर्थिक व्यवस्था में अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए अतिरिक्त आर्थिक अधिकारों और क्षेत्रीय नियंत्रणों का इस्तेमाल किया जाता था। समाज में उसकी हैसियत सबसे ज्यादा होती थी जिसके पास धन का स्रोत ज्यादा होता था, जिसके पास अधिक समय से पदवी होती थी और जिसके पास ज्यादा सशस्त्र सैनिक और कर्मचारी होते थे। एक अपेक्षाकृत कम धनी कुलीन भी एक अधिक अमीर शहरी व्यापारी से अधिक सम्मान्य होता था। इसलिए व्यापारी वर्ग अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अपनी बेटियों की शादी भूमिपतियों से करना चाहते थे। उनके अलग राज्य चिह्न, वस्त्र और सामाजिक रीति रिवाज तो होते ही थे। इस कुलीन वर्ग की एक अन्य खासियत थी कि चाहे जैसी भी स्थिति हो वे स्वंय श्रम नहीं करते थे बल्कि दूसरों से श्रम करवाते थे। वे न तो खेती करते थे और न ही व्यापार करते थे बल्कि दोनों ही कार्यों को नीची निगाह से देखते थे। वे नाइटहुड (नाइट की उपाधि) पदवियों की प्राप्ति को ही अपना कर्म मानते थे और इसके जरिए समाज में वे अपना विशिष्ट स्थान बनाए रखते थे। केवल उच्च वंश के सदस्यों को ही नाइट की उपाधि दी जाती थी। इस प्रकार कुलीन वर्गों जिस में पुरुष और महिलायों दोनों शामिल थे का एक अलग वर्ग था। पुजारी वर्ग भी पहले दर्जे के सदस्य थे क्योंकि वे अपने को ईश्वर मनुष्य के बीच का मध्यस्थ मानते थे। अपने इस विशिष्ट स्थान के लिए उन्हें समाज में कई प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त थे। उन्हें स्वंय और एक संस्था के रूप में चर्च को कोई कर नहीं देना पड़ता था। कुलीन वर्ग उनके इस विशेषाधिकार को मंजूरी देता था तो बदले में चर्च कृषि दास प्रथा को वैधता प्रदान करता था। चर्च सामंती व्यवस्था का एक अभिन्न अंग था। इसके पास भूमि थी और वे सामंतों के समान ही कृषि दासों से खेती करवाते थे और यह उनकी आय का स्रोत था। इस पुजारी वर्ग पर राज्य के कानून भी लागू नहीं होते थे उच्च स्तरीय पुजारी बहुत शक्तिशाली और धनी होते थे। उन्होंने कानूनी संस्थाएं बनाई थीं और उसे सामान्य जनों की आंखों में न्यायोचित ठहराया था। शिक्षा पर भी उनका अधिकार था और उन्होंने कला को धार्मिक कला में परिवर्तित कर दिया था। वे समाज पर शासन करते थे और उनके पास अपार धन सम्पत्ति थी। कुलीन वर्ग के साथ मिलकर उन्होंने समाज में तीन स्तर या वर्ग कायम किए थे -- कुलीन वर्ग, पुजारी और सामान्य जन। उनके अनुसार ऊपरी दोनों दर्जों की सेवा करना और उनके लिए धन अर्जित करना सामान्य जनों का कर्तव्य था।

भूमि पर नियंत्रण, कुलीन वर्ग के पुरुषों की बड़े धार्मिक पदों पर नियुक्ति, भूमिपतियों द्वारा प्रार्थना स्थलों और चर्चों के निर्माण और उन पर काम करने वालों की नियुक्ति अधिकार के कारण दोनों दर्जों में घनिष्ठ आर्थिक और राजनैतिक संबंध स्थापित हो गया था। इन तीनों दर्जों को एक वैधानिक रूप दे दिया गया था जिनके कारण कृषि दास व्यवस्था को जारी रखा गया और इसी कारण कृषि दास व्यवस्था की समाप्ति और अन्य मध्ययूगीन संस्थाओं के रूपातंरण के बापजूद काफी दिनों तक उनका वर्चस्व कायम रहा।

अत: जब हम नए वर्ग समाज की बात करते हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि वर्गों का उदय पहली बार हुआ था। हमारे कहने का बस इतना ही मतलब है कि समाज आधुनिक वर्ग समाज की ओर बढ़ रहा था जिसमें जन्म, सामाजिक दर्जे और वैधानिक आधारों पर विशेषाधिकार के लिए कोई स्थान नहीं था। इस आधुनिक वर्ग समाज के जन्म को बुर्जुआ उदारवाद के उदय और पूंजीवाद के विकास से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। यह परिवर्तन रातों रात नहीं हुआ। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे चली जिसमें पुराना समाज टूटता गया और औद्योगिक क्रांति ने इसे बदलने के लिए मजबूर किया।

विश्व स्तर पर पूंजी का महत्व बढ़ने से इसमें तेजी आई। एक ओर हम यह कह सकते हैं कि आधुनिक समाज के बनने की एक लम्बी, जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया थी। दूसरी ओर हम यह भी कह सकते हैं कि इसका उदय अचानक और नाटकीय रूप से हुआ। प्राचीन और मध्ययुगीन विश्व की अपेक्षा ऐतिहासिक विकास तेजी से हुआ और अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग समयों में एक पूरी पीढ़ी ने अचानक यह महसूस किया कि उनकी पुरानी दुनिया उजड़ गई थी। सम्पूर्ण समाजिक परिदृश्य और बाहरी दुनिया के साथ उनके संबंध रातों रात बदल गए थे। उन्होंने अपने को बदला हुआ पाया, अपनी एक नई तस्वीर देखी और यह देखा कि उनका जीवन बिलकुल दूसरी तरह से व्यवस्थित हो गया था। वे एक नई सामूहिक व्यवस्था के अंग बन गए थे। नए वर्ग उदित हुए और नए वर्ग रूपांतरित होने लगे।

15.3 संक्रमण

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक वर्ग समाज का जन्म पूर्व-आधुनिक समाज के गर्भ से ही हुआ था। कृषक समुदाय और बुर्जुआ वर्ग के बीच हुए वर्ग संघर्ष ने सामंती सामाजिक संरचनाओं को चुनौती दी। राजनैतिक स्तर पर राष्ट्र-राज्य के निर्माण से भी सामंती संरचना को धक्का पहुँचा । यह संक्रमण बहुत ही जटिल था क्योंकि इसमें भूमिधर अभिजात वर्ग और ग्रामीण समुदायों को रूपांतरित होना था जो सामंती सामाजिक ढांचे के प्रमुख स्तंभ थे। सामंती आर्थिक व्यवस्था के वर्ग संघर्ष के क्षेत्रों और रूपों को धक्का पहुंचा और पूंजीवाद विकसित हुआ। पिछली इकाइयों में आप इसकी थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। आधुनिक बुर्जुआ-उदारवादी समाज का विकास सब जगह एक जैसा नहीं था।

आरंभिक आधुनिक यूरोप में मजबूत केंद्रीकृत राजतंत्र स्थापित हुए जिनमें आधुनिक राज्य और राष्ट्र की कई विशेषताएं मौजूद थीं। इन निरंकुश राज्यों ने सामंती भूमिधर अभिजात वर्ग को राजनैतिक तौर पर कम महत्व दिया और व्यापार तथा वाणिज्य की वृद्धि तथा खेती के तरीकों में हुए सुधार ने इस अभिजात वर्ग की प्रकृति रूपांतरित कर दी। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यूरोप की राज्य व्यवस्था में राजतंत्रों द्वारा अपनी सत्ता को केंद्रीकृत करने और उसका दायरा बढ़ाने का प्रयास किया गया जिससे तनाव पैदा हुआ। इन राजतंत्रों ने अपने अधिकार को दैवीय अधिकार कहकर अपनी स्थिति मजबूत करने की कोशिश की। भूमिधर अभिजात वर्ग ने आमतौर पर उनका विरोध किया और अपने परम्परागत विशेषाधिकारों को पुन: स्थापित करने की कोशिश की। अधिकांश मामलों में राजतंत्र कमोबेश हावी रहे। परंतु कुलीन वर्ग और उभरते पूंजीपति समुदायों जैसे विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों के दावों को पूरी तरह नजरअंदाज नहीं किया जा सका। इन वर्गों ने राजतंत्र को समर्थन देने के बदले में राज्य सत्ता में हिस्सेदारी और राज्य संरक्षण की मांग की जिससे शासकों की निरंकुश शक्ति कुछ सीमित हो गई।

नए राष्ट्र-राज्यों में बुर्जुआ वर्ग और राजतंत्रों के बीच स्वाभाविक समझौता था। उन्होंने कर, शुल्क और अन्य ऐसे नियमों का विरोध किया जो व्यापार और अन्य वाणिज्यिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाते थे। सामंती समाजों का राष्ट्र-राज्यों के रूप में गठन और आधुनिक वर्ग समाजों की ओर संक्रमण में शहरों और बुर्जुआ वर्ग की भूमिका प्रमुख थी। एक बार पुरानी अर्थव्यवस्था के समाप्त होते ही प्राचीन सामाजिक स्तरीकरण (इस्टेट सिस्टम)

पूरी तरह समाप्त तो नहीं हुआ परंतु उसमें काफी बदलाव आ गया। यूरोप में व्यापारिक बुर्जुआ वर्ग का उदय हुआ; उनकी आय का जरिया केवल अचल भू सम्पत्ति नहीं थी। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत बाजार के विस्तार के कारण यूरोपीय समाज में ऐसी सामाजिक शक्तियों का जन्म हुआ जिनके हित और मूल्य व्यवस्था पूर्ववर्ती भूमिपतियों, किसानों और यहां तक कि श्रेणियों में संगठित शिल्पियों से अलग थी। ग्रामीण समाज में भी घरेलू उत्पादन व्यवस्था (पुटिंग आउट) ने नवजात बुर्जुआ वर्ग को मजबूत किया जो श्रेणियों पर संगठित शिल्पियों पर सारा भार लादकर मुक्त हो गए। चर्च की भूमि के अधिग्रहण से न केवल चर्च को स्रोत रहित कर दिया गया जो सामंती व्यवस्था का एक प्रमुख स्तंभ था बल्कि चर्च की भूमि की बिक्री से भू सम्पदा अब केवल पुराने भूमिधर अभिजात वर्ग के पास ही सीमित नहीं रह गई। उत्पादन केंद्रों और कारखानों के निर्माण के परिणामस्वरूप मजदूर वर्ग का उदय हुआ जिसका सीधा संबंध औद्योगिक उत्पादन और उद्योग से जुड़े बुर्जुआ वर्ग से था। बुर्जुआ वर्ग के सदस्यों के भूमि प्रबंधक या पूंजीपति किसान बनने से (खासकर इंग्लैंड में घेराबंदी के बाद) महत्वपूर्ण कृषि सर्वहारा वर्ग अस्तित्व में आया। इस प्रकार दो नए वर्गों का जन्म हुआ – एक बुर्जुआ वर्ग जो व्यापार, वित्तीय और औद्योगिक क्षेत्रों में फैला हुआ था और दूसरा सर्वहारा वर्ग जो कृषि और उद्योग में श्रमरत था। इन दो वर्गों ने अठारहवीं शताब्दी के सामाजिक परिदृश्य को बदलना शुरू किया।

इन सब परिवर्तनों के बावजूद यूरोप में भूमिधर अभिजात वर्ग का सामाजिक और राजनैतिक वर्चस्व बना रहा। अभी भी भू सम्पदा प्रतिष्ठा का आधार थी और यह आमदनी का प्रमुख जरिया भी थी। पुराने जमाने में यह सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक संबंधों का आधार भी था जिसके बारे में आप पिछली इकाई में जानकारी हासिल कर चुके हैं। अभी भी यूरोप में किसी न किसी रूप में ये व्यवस्थाएं मौजूद थीं। अभी भी भूमिधर अभिजात वर्ग को किसी न किसी रूप में जन्मजात वैधानिक विशेषाधिकार प्राप्त थे। अभी भी रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट चर्च भूमिधर अभिजात वर्ग से जुड़े हुए थे। शहरों में रहने वाला अधिकांश श्रमबल श्रेणियों में संगठित था और पूरे महाद्वीप में किसान उच्च सामंती करों से मुक्त नहीं हो सके थे। उद्योगों के उभरने के बावजूद प्रत्येक देश का कुलीन वर्ग सबसे समृद्ध वर्ग था। हालांकि भूमि इस अभिजात वर्ग की आय का प्रमुख स्रोत था परंतु इनकी भूमिका अपने इलाके तक ही सीमित नहीं थी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनका प्रभाव देखा जा सकता था। 18वीं शताब्दी का युग भूमिधर अभिजात वर्ग के वर्चस्व का युग था। हालांकि यह अभिजात वर्ग अपने को उभरते पूंजीवाद से जोड़ रहा था। एक नया समाज बन रहा था परंतु पुराना समाज पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ था।

बोध प्रश्न 1

1) पूर्व-आधुनिक वर्ग समाज आधुनिक वर्ग समाज से किस प्रकार भिन्न था?

....

....

....

....

....

2) यूरोप में केंद्रीकृत राजतंत्रों की क्या भूमिका थी?

....

....

....

....

....

3) आधुनिक वर्ग समाज की ओर संक्रमण से हमारा क्या तात्पर्य है?

....

....

....

....

....

15.4 प्राचीन अवशेष के तत्व : सम्पदा और नैगमिक निकाय

नए समाज में पुराने जमाने के अवशेष के रूप में भू-सम्पदाएं और निगम निकाय मौजूद थीं और 19वीं शताब्दी में इनका अस्तित्व कायम रहा। यहां तक कि इंग्लैंड ,जहां 1640 की क्रांति के बाद संसदीय सरकार और आर्थिक विकास का सिलसिला आरंभ हो चुका था और जिसके फलस्वरूप पूंजीवाद का जन्म हुआ, में भी कुलीन वर्ग और भद्रजन राज्य के प्रमुख समर्थन आधार बने रहे और ग्रामीण इलाकों में इनके पास काफी मात्रा में शक्ति केंद्रित रही। 18वीं और 19वीं शताब्दी के आरंभ का संसद आज से बिलकुल अलग था जो संसदीय प्रजातंत्र में रहने वाले अमीर और गरीब सभी लोगों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है। पूरे यूरोप में प्रतिनिधि संस्थाओं में केवल उच्च वर्ग का ही प्रतिनिधित्व था क्योंकि किसी न किसी प्रकार के सम्पत्ति के मालिक ही इसमें भाग ले सकते थे जिन्हें 'मुक्त प्रजा' कहा जाता था। गरीब जनता को किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त नहीं था। इसलिए जब सांसद उदारवाद और सम्पत्ति के पक्ष में बोलते थे तो वे और भी विशेषाधिकार और सम्पत्ति की मांग कर रहे होते थे। ये सांसद अपने समाज के अमीर लोगों के या स्वंय अपने विशेषाधिकारों में वृद्धि करने का प्रयत्न करते थे। उन्हें आम आदमी की कोई चिंता नहीं थी। हालांकि जब उन्हें अपने शासकों से कोई बात मनवानी होती थी तो वे उन्हीं आम वर्गों का सहारा लेते थे।

फ्रांसीसी क्रांति के विचारों में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का विचार शामिल था। इसके अलावा आधुनिक राजनीति और आधुनिक जनता के निर्माण में जन सम्प्रभुता और राष्ट्र का भी योगदान था। पंरतु पूरे यूरोप की प्रातिनिधिक संस्थाओं में जनता को प्रतिनिधि के रूप में शामिल नहीं किया गया। अभी प्रजातंत्र अमीरों की मुट्ठी में था और इसमें उन्हीं की हित पूर्ति होती थी। 19वीं शताब्दी के दौरान भी भूमिधर अभिजात वर्ग संसदीय-प्रातिनिधिक संस्थाओं के नियंत्रण और एकाधिकार के द्वारा अपने हितों की रक्षा करता था।

इंग्लैंड में मत देने का अधिकार केवल धनी व्यक्तियों को ही था। यहां तक कि 1867 और 1881 के सुधार अधिनियमों तक बुर्जुआ वर्ग को भी मत देने का अधिकार प्राप्त नहीं था। इसके अलावा शहरों की अपेक्षा गांव में रहने वालों को अधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त था जबकि शहरों की जनसंख्या ज्यादा संकेदित थी। इसलिए बुर्जुआ वर्ग के मजबूत सामाजिक और आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने के बावजूद भूमिधर अभिजात वर्ग केवल अपने हितों की रक्षा करता रहा। यहां तक कि संसद के कई सुधार अधिनियमों के जरिए हाउस ऑफ कॉमन्स में सामान्य जनों के प्रवेश के बावजूद संसद में हाउस ऑफ लॉर्ड्स में ब्रिटेन के कुलीन वर्ग के 400 अमीर घरानों का प्रतिनिधित्व था। फ्रांस में भी इसी तरह संसद और प्रांतीय विधान सभाओं में भूमिधर अभिजात वर्ग का वर्चस्व था। पुनर्स्थापना (रेस्टोरेशन) के बाद सदन को दो भागों में विभाजित किया गया। ऊपरी सदन के सदस्यों का मनोनयन सम्राट किया करता था। जर्मनी में विभिन्न राज्यों की प्रांतीय विधान सभाओं में और जर्मनी के एकीकरण के बाद भी उच्च सदन में भूमिधर अभिजात वर्ग का वर्चस्व था और चांसलर बिस्मार्क सम्रांट के प्रति उत्तरदायी था जिसके पास असीम शक्ति थी। रूसी साम्राज्य में कुलीन वर्ग के घोषणा पत्र, सुधार पूर्व प्रांतीय सभाओं और सुधारोत्तर जेम्स्तवो ने कानूनी दृष्टि से भूमिधर अभिजात वर्ग और बुर्जुआ वर्ग को अलग कर दिया। 20वीं शताब्दी में भूमिधर अभिजात वर्ग और किसान 'इस्टेट्स' में विभाजित और वैधानिक बने रहे। इन राजनैतिक संस्थागत व्यवस्थाओं ने संविधानवाद में बाधा पहुंचाई और व्यापक राजनैतिक प्रजातंत्र के लिए होने वाले वर्ग संघर्ष को कमजोर बनाया।

15.5 वर्गीय पहचान

यूरोप में सामंती व्यवस्था ने प्रत्येक राज्य या समाज की सामूहिकता के विचार को मजबूत किया जिसमें कई छोटे समुदाय शामिल थे। 18वीं शताब्दी तक लोग व्यक्तिगत अधिकारों से परिचित नहीं थे। एक व्यक्ति को इस प्रकार का अधिकार और विशेषधिकार अपने समुदाय या समूह से प्राप्त होता था। इस 'समुदाय' में गांव, नगर निगम, कुलीन वर्ग, चर्च शामिल होते थे। प्रत्येक समुदाय को अपनी हैसियत के अुनसार या तो कुछ विशेषाधिकार प्राप्त थे या उनकी स्थिति कमजोर थी। फ्रांसीसी क्रांति की इकाई का अध्ययन करते समय आप पुरानी शासन व्यवस्था का विस्तार से अध्ययन कर चुके हैं।

15.5.1 समुदाय

इस सामुदायिक जीवन और सामूहिक चेतना का आधार पूर्व- औद्योगिक परिवार आधारित अर्थव्यवस्था थी जो एक विस्तृत परिवार के उपभोग और उत्पादन की आधरभूत इकाई थी। सामूहिक परम्परागत अधिकार इस परिवार अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग था और भूमिधर अभिजात वर्ग द्वारा इन अधिकारों के हनन के खिलाफ पहली बार शोषितों ने संघर्ष किया था। अपने सामुदायिक अधिकारों, सामूहिक स्वतंत्रता और समतावाद की रक्षा करने के लिए सबसे पहले वर्ग संघर्ष हुए थे। इन आरंभिक सामंत विरोधी संघर्षों में प्राचीन समुदायों के विघटन और किसान चेतना के उदय के बीच सेतु का काम किया। किसान चेतना के द्वारा खेत में काम करने वाले लोगों का वर्ग हित सामने आया। 1789-91 में फ्रांस में शहरों के साथ-साथ गांवों में जो भी आन्दोलन हुए उससे राष्ट्र का सामाजिक और राजनैतिक जीवन रूपांतरित हो गया। इस्टेट्स जेनरल को राष्ट्रीय सभा में रूपांतरित करने में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। इंग्लैंड में घेराबंदी के खिलाफ किसानों ने विद्रोह कर दिया। जर्मनी में किसानों ने संस्थागत व्यवस्थाओं में होने वाले परिवर्तन को आसानी से स्वीकार नहीं किया। रूसी साम्राज्य में 1861 के सुधारों के बाद किसानों के आंदोलनों की प्रकृति में काफी बदलाव आया।

15.5.2 भूमिधर अभिजात वर्ग

भूमिधर अभिजात वर्ग को इस्टेट से वर्ग में रूपान्तरित होने के लिए समान रास्ता अख्तियार करना पड़ा। सबसे पहले उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अभिजात होने का संबंध जन्म और वैधानिक विशेषाधिकार से जुड़ा हुआ है। परिवर्तन के समय वे अपने जन्म और वंश के आधार पर पदों पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयत्न करते थे। यह बात पूरे यूरोप पर लागू होती थी। पूरी 18वीं और 19वीं शताब्दी के कुछ समय तक तथा रूस में इसके काफी बाद तक और चर्च, सेना और नौकरशाही के सभी ऊंचे पद कुलीन वर्ग के लोगों को मिलते थे। अभी भी कुछ विशेषाधिकार 'अनुवांशिक' थे। दूसरे उन्होंने अपने को विशिष्ट बनाए रखने का प्रयत्न किया ताकि उनके पदों और संस्थाओं में किसी का प्रवेश न हो सके। राजतंत्रों द्वारा नए अभिजात वर्ग के निर्माण के प्रयत्न के बावजूद वे अपनी विशिष्टता कायम रखने का प्रयत्न करते थे। पूरे महाद्वीप में उन्होंने अपने सामंती मांगों पर पुन: दावा किया। इसी प्रकार उन्होंने ग्रामीण इलाकों में अपना वर्चस्व कायम करने का प्रयत्न किया। इंग्लैंड में उन्होंने शिकार कानून बनवाया जिसके द्वारा उन्हें शिकार करने का विशिष्ट अधिकार प्राप्त हुआ। वे इस अधिकार पर स्वंय नियंत्रण भी रख सकते थे क्योंकि वे ही कानून बनाने वाले थे और कानून तोड़ने वालों को दंडित करना भी उन्हीं के अधिकार क्षेत्र में आता था। फ्रांस के अभिजात वर्ग ने अपने और चर्च के लिए करों से मुक्ति संबंधी विशेषाधिकार की समाप्ति को रोकने का प्रयास किया और इसके लिए 1789 में 'इस्टेट जेनरल' की बैठक बुलाई। जर्मनी में 1848 की क्रांति और फ्रैंकफर्ट सभा के बाद भी अपने कई विशेषाधिकार बचा कर रखे रूस में सभी पदों पर नियंत्रण रखने के साथ-साथ उन्होंने तानाशाही व्यवस्था को समर्थन दिया और उनके अधिकारों की रक्षा की।

अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के साथ-साथ अभिजात वर्ग ने भी अपने को पूंजीवादी विकास के अनुसार ढालना शुरू कर दिया और खासतौर पर इंग्लैंड, पूर्वी जर्मन राज्यों और रूसी साम्राज्य में उन्होंने भूमि पर सीधे नियंत्रण स्थापित करने पर बल दिया। इंग्लैंड में घेराबंदी और सड़कों, नहरों, रेलवे, कोयला खानों, आदि में पूंजी निवेश, पूर्वी जर्मनी में भूमिहीन कृषकों की मुक्ति, पश्चिम जर्मनी में किराया कानून और रूसी साम्राज्य में मुक्ति की शर्तें वस्तुत: एक वर्ग के रूप में भूमिपतियों के हितों और आधिपत्यों की ही अभिव्यक्ति थी। इसके अलावा एक वर्ग के रूप में ऐसे भूमिधर अभिजात वर्ग का जन्म हुआ जिसका हित पूंजीवादी विकास से जुड़ा हुआ था।

15.5.3 बुर्जुआ और मजदूर वर्ग

वर्ग के रूप में बुर्जुआ वर्ग के निर्माण की कथा कुछ अलग है। आरंभ से ही पूर्व- आधुनिक और सामंती समाज के गर्भ से जन्म लेने और अभी भी सामान्य जनों का हिस्सा होने के कारण इसे कुछ खोना नहीं था। इसका जन्म सामंतवाद की समाप्ति के लिए हुआ था। यह वर्ग, जो अपने आरंभिक दौर में कुछ छोटे-मोटे व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करता था, शक्तिशाली बना और पूंजीवाद का वाणिज्यिक, वित्तीय और औद्योगिक प्रतिनिधि बनकर उभरा।

शिल्पियों ने सबसे पहले उन मशीनों को नकारना शुरू किया जिन्होंने उनकी रोजी-रोटी छीनी थी और उनकी जीवन शैली को तहस-नहस कर दिया था। धीरे-धीरे इसने मजदूर आंदोलन का रूप ले लिया। कारखानों में कार्यरत सर्वहारा वर्ग के उदय से अन्ततः पूंजी और श्रम का द्विभाजन सामने आया जो आधुनिक वर्ग समाज का प्राथमिक अन्तर्विरोध बन गया। अपनी श्रम प्रक्रिया और अपनी वस्तुनिष्ठ स्थिति में सर्वहारा एक वर्ग के रूप में उभरा जिनके हित अनिवार्यतः बुर्जुआ वर्ग के विरोधी थे और समाज की पूंजीवादी व्यवस्था के भी वे विरोधी थे। आर्थिक उत्पादन में पूंजी के महत्वपूर्ण होते ही बुर्जुआ वर्ग यथास्थिति का प्रतिनिधि बन गया और मजदूर वर्ग का वर्ग संघर्ष इतिहास की नियामक शक्तियां बन गईं। जैसा कि मार्क्स ने बताया है कि एक ऐसा वर्ग निर्मित हुआ जिसकी मुक्ति से वर्ग शोषण की समाप्ति हो सकती थी और होगी। अर्थव्यवस्था और समाज का पूरा आधार बदल गया। अब वह वर्ग जिसका सम्पत्ति पर अधिकार था और जो इस पर काम करते थे उनके बीच का संबंध सामंतवादी संबंधों से अलग था। फ्रांसीसी क्रांति के आदर्शवाद और 1830 और 1848 की क्रांतियों से जन्मी आधुनिक राजनीति का मूलभूत आधार यही था कि किसी भी विशेषाधिकार पर प्रश्न उठाया जा सकता है। जनतंत्र की शक्तियों ने क्रांति की जिसने 'इस्टेट्स' की सभी वैधानिकताओं को समाप्त कर दिया। वर्गीय अस्मिताएं पूंजीवाद के उत्पादन संबंधों से जुड़ गई और इसके साथ यूरोप के अधिकांश हिस्सों में आधुनिक वर्ग समाज की स्थापना हुई।

15.6 प्रतिस्पर्धी पहचान : राष्ट्र

राष्ट्र-राज्य के जन्म और संगठित होने के सिद्धांत के रूप में राष्ट्र के उदय के समानांतर आधुनिक वर्ग समाज का उदय और विकास हुआ। वस्तुतः राष्ट्र आधुनिक समाज का राजनैतिक रूप था। फ्रांसीसी क्रांति के द्वारा सभी लोगों को मौलिक अधिकार प्रदान करने के लिए राष्ट्र की अवधाराणा के जनतंत्रीकरण के प्रयत्न से भी दोनों के बीच के संबंध का पता चलता है। राजा या रानी की प्रजा से नागरिकता की ओर संक्रमण में कानून के समक्ष समानता, निजी सम्पत्ति और एकीकृत बाजार अन्तर्भूत था। 19वीं शताब्दी के दौरान समाचार पत्र, शैक्षिक व्यवस्था, धार्मिक आंदोलन और अन्तर-साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता ने राष्ट्रीय अस्मिताओं को मजबूत बनाने में और आत्म-जागरूक राष्ट्रीय आंदोलनों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इटली, जर्मनी और मध्य यूरोप में उन्होंने शक्तिशाली ताकतों का प्रतिनिधित्व किया और छोटे तबकों के लोगों और उभरते मध्य वर्ग के वर्ग हितों को शामिल किया। लोग स्वाभाविक रूप से इन राष्ट्रीय आंदोलनों से जुड़ गए। कई बार इन राष्ट्रीय आंदोलनों में उनके वर्ग हित की उपेक्षा हुई और कभी प्रतिनिधित्व भी नहीं मिला फिर भी लोग राष्ट्रीय भावना में बह गए। कुछ देशों में जो पहले से ही राष्ट्र थे किसान फ्रांसीसी नागरिक बन गए। प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत के साथ इन सभी देशों की सरकारों द्वारा राष्ट्रीय हितों की रक्षा का आह्वान किया गया और मजदूर वर्ग ने उनका साथ दिया। इन सभी घटनाओं की चर्चा विस्तार से पिछली इकाइयों में की जा चुकी है और आप राष्ट्रवाद के विभिन्न प्रकारों और चरणों से भलिभांति परिचित हैं। परंतु यहां यह याद करना आवश्यक है कि राष्ट्रीय अस्मिता ने वर्ग निष्ठाओं को समाप्त नहीं किया। जर्मनी, इटली और रूस में मजूदर आंदोलन एक महत्वपूर्ण राजनैतिक शक्ति थी और पूरे यूरोप में सामाजिक जनतांत्रिक दल में बड़ी संख्या में मजदूर वर्ग शामिल था और यह सबसे बड़ा राजनैतिक दल था। रूस की 1917 की क्रांति में और पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने में मजदूर वर्ग एक प्रमुख राजनैतिक शक्ति था। बुर्जुआ वर्ग ने राष्ट्र के हित से ज्यादा अपने हितों को ध्यान में रखा और राष्ट्र को अपने हित के लिए इस्तेमाल किया। यहां यह याद रखना आवश्यक है कि जब हम राष्ट्र की बात करते हैं तो उसमें सभी वर्गीय अस्मिताएं शामिल होती हैं।

15.6.1 अन्य प्रतिस्पर्धी

महिलाओं के आंदोलनों खासकर नारीवादी आंदोलनों और महिला अध्ययनों के कारण स्त्री अस्मिता की चेतना जागृत हुई। महिलाओं के विभिन्न आंदोलनों और मजदूर संघर्षों के बीच अनुभवों से आदान-प्रदान के कारण स्त्री अस्मिता का प्रश्न काफी तीखे रूप में उभर कर आया। यह बात बहुत शिद्दत से महसूस की जा रही थी कि उनकी मांगों को आम मांगों से अलग रखा जाना चाहिए। मताधिकार के लिए संघर्ष, समान काम के लिए समान वेतन, उत्तराधिकार का अधिकार और पितृसतात्मकता की कतिपय अभिव्यक्तियों ने स्त्री-पुरुष भेदभाव के मुद्दों के विषय में जागरूकता पैदा करने में मदद की।

हाल के दशकों में श्रम और औद्योगिक क्षेत्रों से दूर पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं की पुनर्रचना होने से पुराने श्रम आधारित मजदूर वर्गों की शक्ति क्षीण होने लगी और 'उत्तर औद्योगिक' समाज का जन्म होने लगा। इसके परिणामस्वरूप नए प्रकार के श्रम रहित रोजगार सामने आने लगे जिसमें सेवा क्षेत्र प्रमुख है। ऐसा माना जाता है कि जनता की सामूहिक और व्यक्तिगत अस्मिता पर इन परिवर्तनों का पर्याप्त प्रभाव पड़ेगा। समाज में संरचनात्मक विभाजनों और इकाइयों के लिए नए आधार के रूप में अपने और समाज के बारे में लोगों की धारणा बदलने लगी और इसमें उत्पादन की अपेक्षा उपभोग पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा। इस 'उत्तर औद्योगिक' समाज को एक जन समाज के रूप में देखा गया जिसमें संभ्रांत और जनता के बीच आधारभूत विभाजन था और इस तरह वर्ग समाज का अन्त माना गया। क्षेत्रीय, जातीय, सामुदायिक और स्त्री-पुरुष अस्मिताएं प्रमुखता से उभर कर सामने आईं।

इस विचार पर भी विद्वान एकमत नहीं हैं। दृष्टिकोण चाहे कुछ भी हों वर्ग अब भी समकालीन समाज का एक आधारभूत यथार्थ है और वर्गीय सदभाव तथा एकजुटता का अभी भी महत्व है। उच्च तकनीकी विशेषज्ञता से केवल कुछ श्रम बल ही प्रभावित होते हैं और शारीरिक श्रम बल पर ही आधारित कई नए रोजगार ऐसे हैं जिसमें किसी कुशलता की जरूरत नहीं है और इसे शारीरिक श्रम करने वाला कोई भी मजदूर कर सकता है। आज पूंजीवाद के तहत मजूदरों की मजदूरी का यथार्थ यह है कि यह शोषणात्मक है और यह पूंजी के हित को साधता है। जन संचार माध्यमों की शक्ति के नीचे भले ही वर्ग संबंध दबे या छिपे हुए हैं और उत्पादन तथा उपभोग के अधिक परिष्कृत रूप उपलब्ध हों परंतु उत्तर औद्योगिक पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था में पूंजी और श्रम के संबंध का अन्तरविरोध मौजूद है। पूंजी और श्रम का द्विभाजन भी समकालीन समाज का अनिवार्य आधार बना हुआ है। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि पूंजीवादी व्यवस्था की समाप्ति के बाद ही श्रमिकों का शोषण समाप्त हो सकता है।

बोध प्रश्न 2

1) पूर्व-औद्योगिक समाज में सामुदायिक चेतना की क्या भूमिका थी ?

....

....

....

....

....

2) भूमिधर अभिजात वर्ग ने किस प्रकार अपने को बनाए रखने का प्रयत्न किया?

....

....

....

....

....

3) औद्योगिक समाज में नई अस्मिताओं के उदय के बारे में आप क्या जानते हैं ?

....

....

....

....

....

15.7 सारांश

इस इकाई में आपने निम्नलिखित मुद्दों पर विचार किया।

- अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए किस प्रकार पूंजी ने पुरानी सामंती व्यवस्था को बदल दिया।
- कई छोटे समुदायों में मौजूद पूर्व आधुनिक समाज में किस प्रकार कई तरीकों से अस्मिता को नजरअंदाज किया गया।
- किस प्रकार औद्योगिक समाज के नए अनुभवों ने नई सामूहिकताओं और अस्मिताओं का निर्माण किया।

15.8 शब्दावली

केंद्रीकृत राजतंत्र : राजतंत्र में राजा के पास सारी राजनैतिक शक्ति होती थी। इसमें कुलीनों और अन्य सामंतों की शक्ति कमजोर रहती थी।

धार्मिक पद : चर्च द्वारा स्वीकृत पद

बरो : इंग्लैंड में एक संसदीय क्षेत्र

ज़ेम्सतोव : रूसी विधान सभा

15.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 15.2। इसमें आप समुदाय की भूमिका आदि की चर्चा कर सकते हैं।
2) देखिए भाग 15.3। सामंती भूमिधर अभिजात वर्ग की शक्ति कम करने में इसकी भूमिका पर विचार कर सकते हैं।
3) देखिए भाग 15.2। जन्म आदि के आधार पर विशेषाधिकारों की समाप्ति की चर्चा की जा सकती है।

बोध प्रश्न, 2

1) देखिए उपभाग 15.5.1।
2) देखिए उपभाग 15.5.2। जन्म आदि के आधार पर विशेषाधिकार को बढ़ावा देने के प्रयत्नों का उल्लेख कर सकते हैं।
3) देखिए उपभाग 15.5.3, भाग 15.6 और उपभाग 15.6.1।

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

पी लैसलेट, आर. वाल (संपादन) **हाउसहोल्ड ऐंड फेमिली इन पास्ट टाइम**, कैम्ब्रिज 1972

आर वाल, जे रॉबिन, पी.लैसलेट (संपादन) **फेमिली फॉर्म्स इन हिस्टोरिक यूरोप**, कैम्ब्रिज, 1983।

रिगले ऐंड रोजर शोफिल्ड, **द पोपुलेशन हिस्ट्री ऑफ इंग्लैंड**, 1541-1871, कैम्ब्रिज, 1981।

बैरिंगटन मोरे (जरनल), **सोशल ऑरिजिन्स ऑफ डिक्टेटरशीप ऐंड डेमोक्रेसी**, 1974।

हॉब्सबॉम, द एज ऑफ रिवोल्यूएशन, 1789-1848, रूपा ऐंड कां०, 1992।

हॉब्सबॉम, द एज ऑफ कैपिटल, रूपा ऐंड कं०, 1992।